بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

Office of The sadar Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश खुत्बः जुम्अः सैय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीहिल अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक **02.03.2018** मस्जिद बैतुल फ़तूह लंदन।

मुसलमान आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से प्रेम का दावा तो करते हैं किन्तु आप स.अ.व. की बातों तथा सुन्नत के अनुसार कार्य नहीं करते।

उनकी यह दशा हम अहमदियों को इस ओर ध्यान दिलाने वाली होनी चाहिए कि हम अपने समस्त प्रयासों के साथ उच्चतम शिष्टाचार को अपनाने का प्रयत्न करें जो इस्लाम की शिक्षा है और जिसका सुन्दर नमूना आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमारे सामने स्थापित फ़रमाया है।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

इस्लाम में उच्चतम शिष्टाचार अपनाने, प्रत्येक अवसर पर अच्छे आचरण दिखाने, घरों में तथा समाज में भी प्रत्येक स्तर पर दिखाने, अपनों तथा ग़ैरों के साथ अच्छे आचरण प्रकट करने की जितनी शिक्षा दी गई है किसी अन्य धर्म में इस प्रकार के विवरण सहित बयान नहीं किया गया। किन्तु दुर्भाग्यवश मुसलमान ही हैं जो सामान्यतया इस दृष्टि से निचले स्तर पर समझे जाते हैं। ग़ैर मुस्लिम इन पर उंगली उठाते हैं क्यूँकि इनके कर्म, जो कुछ ये कहते हैं इसके विरुद्ध हैं। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी उम्मत को शिष्टाचार के उच्चतम स्तरों को प्राप्त करने पर ज़ोर दिया है। मुसलमान सामान्य रूप से रसूल की मुहब्बत का दावा तो करते हैं लेकिन आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बातों तथा सुन्नतों के अनुसार कर्म न होने के बराबर हैं। मुसलमानों की इसी अवस्था के हवाले से जब ये हालात होने थे अल्लाह तआला ने मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को भेजा। परन्तु इस ओर भी ये लोग ध्यान देने से इंकारी हैं तथा अत्यंत अभद्र और गन्दी भाषा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम तथा आपके मानने वालों के लिए प्रयोग करते हैं और इसका परिणाम भी ये भुगत रहे हैं, दुनिया में हर स्थान पर। जैसा कि मैंने कहा, ग़ैर मुस्लिम इन पर उंगली उठाते हैं। उनकी यह दशा हम अहमदियों को इस ओर ध्यान दिलाने वाली होनी चाहिए कि हम अपने समस्त प्रयासों के साथ उच्च शिष्टाचार को अपनाने का प्रयास करें, जो इस्लाम की शिक्षा है और जिसका सुन्दर नमूना आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमारे सामने क़ायम फ़रमाया है। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अमल को हम देखें तो अदभुत स्तर दिखाई देते हैं। आपके घरेलू हालात को देखें तो कहीं आप एक बीवी पर दूसरी बीवी के छोटे क़द का उपहास करने पर बड़ी अप्रसन्नता प्रकट करते हैं। कहीं आप बच्चों के आचरण बुलन्द करने का उपदेश देते हैं कि लोगो के फलों के वृक्षों पर पत्थर मारकर उनका कच्चा पक्का फल जो है, वह नष्ट न करें। फिर एक बच्चे को तेज़ी से अपना हाथ थाली पर फेरने के कारण फ़रमाया कि पहले बिस्मिल्लाह पढ़ो, अपने दाएँ हाथ से खाओ तथा अपने सामने से खाओ। अतः बच्चों का प्रशिक्षण भी इस रंग में होना चाहिए ताकि बड़े होकर उच्च शिष्टाचार पैदा हों।

फिर झूठ एक पाप है और सत्य एक नेकी है, इसको बचपन से ही बच्चों के दिलों में स्थापित करने के लिए आपने इस प्रकार नसीहत फ़रमाई कि एक सहाबी अपने बचपन की घटना बयान करते हैं कि एक बार आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हमारे घर पधारे और मैं अपने बचपन के कारण थोड़ी देर बाद ही आपकी उपस्थिति में ही घर से बाहर खेलने के लिए जाने लगा तो मेरी माँ ने मुझे इस बरकत वाले वातावरण से दूर जाने से रोकने के लिए कहा कि इधर आओ, अभी यहीं रहो मैं तुम्हें एक चीज़ दूँगी। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस पर फ़रमाया कि तुम इसे कुछ देना चाहती हो? मेरी माँ ने कहा कि हाँ मैं इसे एक खजूर दूँगी। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस पर फ़रमाया कि यदि तुम्हारा यह निश्चय न होता तथा तुम केवल बच्चे को बुलाने के लिए यह कहतीं तो तुम फिर झूठ बोलने का पाप करने वाली होतीं। अब इस बच्चे को भी इस छोटी

सी आयु में सत्य के महत्त्व तथा झूठ से घृणा स्पष्ट हो गई और बड़े होने तक यह बात उन्होंने याद रखी तथा बयान फ़रमाई।

एक बार एक व्यक्ति से फ़रमाया कि यदि तुम सारे दोष नहीं छोड़ सकते तो झूठ बोलना छोड़ दो। क्या आजकल के मुसलमानों के ये स्तर हैं कि इस सूक्ष्मता के साथ झूठ से बचें तथा सत्य की स्थापना करें। हमें अपने भी निरीक्षण करने चाहिएँ कि क्या हमारे ये स्तर हैं। एक रिवायत में आता है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने गुनाह-ए-कबीरा (घोर पाप) के विषय में बताते हुए फ़रमाया कि घोर पाप यह है कि अल्लाह के साथ किसी को भागीदार समझना, माता-पिता की अवज्ञा करना और कहने वाले कहते हैं कि आप टेक लगाकर बैठे ये बातें कर रहे थे, उठ कर बैठ गए तथा फ़रमाया कि ध्यान पूर्वक सुनो- झूठ बोलना तथा झूठा साक्ष्य, आपने यह बात कई बार दोहराई और कहते चले गए। बताने वाले कहते हैं कि हमारी इच्छा हुई कि काश, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अब चुप हो जाएँ। फिर हम इस रंग में आपके आचरण का प्रदर्शन देखते हैं कि एक बद्दू मस्जिद में पेशाब करने लगा, लोग उसकी ओर दौड़े रोकने के लिए। आपने फ़रमाया इसे छोड़ दो और जहाँ पेशाब किया है वहाँ पानी बहा दो। फिर आपने फ़रमाया कि तुम लोगों में सुविधा देने के लिए पैदा किए गए हो, न कि तंगी देने के लिए। इस पर वह बद्दू सदैव आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दया शीलता का वर्णन किया करता था।

एक अवसर पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि यदि तुम यह जानना चाहते हो कि तुम बुरा कर रहे हो या अच्छा कर रहे हो तो फिर अपने पड़ौसी की ओर देखो कि वे तुम्हारे विषय में क्या सोचते हैं। फिर अफ़सरों को फ़रमाया कि तुम्हारे अच्छे आचरण का उस समय पता चलेगा जब तुम अपने आपको जाति का सेवक समझोगे तथा अपनी सम्पूर्ण क्षमताओं के साथ लोगों की सेवा करोगे। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- कहाँ दिखाई पड़ते हैं ये स्तर हमारे लीडरों तथा अफ़सरों में। अतः हमारे जो जमाअत के ओहदेदार हैं उनको भी इस बात की ओर ध्यान देना चाहिए।

मक्का विजय के अवसर पर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उच्चतम शिष्टाचार का किस प्रकार प्रदर्शन किया। आपने शत्रुओं को क्षमा कर दिया, जो जान के दुश्मन थे, जिन्होंने घोर यातनाएँ दी थीं और फिर यही क्षमा शीलता जो है, वह बहुत सों के इस्लाम लाने का कारण बन गई। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उच्चतम शिष्टाचारों का वर्णन करते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक स्थान पर फ़रमाते हैं-

अल्लाह जल्ला शानुहू हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सम्बोधित करते हुए फ़रमाता है कि وَإِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِيْمٍ अर्थात तू शिष्टाचार के उच्चतम स्तर पर स्थापित है। अतः इसका अर्थ यह है कि समस्त प्रकार शिष्टाचार के, दानशीलता है, निर्भयता है, न्याय है, दया है, उपकार है, सत्य एवं साहस इत्यादि तुझ में एकत्र हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उच्च आचरण दिखाने की विभिन्न अवस्थाओं का वर्णन करते हुए फ़रमाया- इंसान के आचरण दो प्रकार से प्रकट हो सकते हैं, या परीक्षा की घड़ी के समय अथवा पुरस्कार की अवस्था के समय। यदि एक ही अवसर हो तथा दूसरा न हो तो फिर आचरण का पता नहीं चल सकता। क्यूँकि ख़ुदा तआला ने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आचरण सम्पूर्ण करने थे इस कारण से कुछ भाग आपके जीवन का मक्की है तथा कुछ भाग मदनी। मक्का के दुश्मनों की बड़ी बड़ी यातनाओं पर धैर्य का नमूना दिखलाया तथा उन लोगों के अत्यंत कठोर व्यहार के बावजूद फिर भी आप उनके साथ विनम्रता एवं दया के साथ व्यवहार करते रहे और जो सन्देश ख़ुदा तआला की ओर से लाए थे उसकी तबलीग़ में कमी न होने दी। फिर मदीना में आपको जब प्रभुत्व प्राप्त हुआ तथा वही शत्रु बन्दी बनकर पेश हुए तो उनमें से अधिकांश को आपने क्षमा कर दिया। ये उच्च आचरण ऐसे थे जिन्होंने लोगों को अपना मुग्ध कर लिया तथा एक प्रकार का चमत्कार दिखाया। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हमें फ़रमाते हैं कि यदि तुम उस सुन्नत के अनुसार चलते हुए अपने आचरण शुद्ध कर लो तथा प्रत्येक आचरण को अवसर और समय के अनुसार उपयोग में लाओ तो तुम भी चमत्कार दिखाने वाले बन सकते हो। आप फ़रमाते हैं- विलक्षण बातों पर तो किसी न किसी रंग में लोग आपत्ति कर देते हैं तथा उनको टालना चाहते हैं किन्तु उच्च शिष्टाचार का व्यवहार एक ऐसी करामत है जिस पर कोई उंगली नहीं रख सकता तथा यही कारण है कि हमारे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सबसे बड़ा शक्ति शाली चमत्कार शिष्टाचार ही का दिया गया। जैसा कि फ़रमाया- وَإِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِيْمٍ फ़रमाया कि यूँ तो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हर प्रकार के विलक्षण, प्रमाणिक शक्ति के आधार पर समस्त नबियों अलैहिस्सलाम से बजाए ख़ुद बढ़े हुए हैं परन्तु आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आचरण सम्बंधी विलक्षणों का स्तर सर्वाधिक है जिसका उदाहरण संसार का इतिहास नहीं दे सकता तथा न ही प्रस्तुत कर सकेगा। फ़रमाया कि मैं समझता हूँ कि प्रत्येक व्यक्ति जो अपने बुरे आचरण को छोड़कर अच्छे आचरण को अपनाता है उसके लिए वही करामत है। उदाहरणत्या- यदि बड़ा कठोर एवं उत्तेजित स्वभाव तथा क्रोध करने वाला इन बुरी प्रवृत्तियों को छोड़ता है तथा विनम्रता और दया को धारण करता है अथवा शुष्क व्यवहार को छोड़ कर दान शीलता तथा द्वेष के बजाए सहानुभूति को अपनाता है तो निःसन्देह यह करामत है और ऐसा ही आत्म प्रशंसा तथा आत्म प्रदर्शन को छोड़ कर जब विनयता और फ़िरोतनी को धारण करता है तो यह विनम्रता ही करामत है।

फ़रमाया कि- अतः तुम में से कौन है जो नहीं चाहता कि करामाती बन जावे। इंसान शिष्टाचार की अवस्था को ठीक करे

क्यूँकि यह एक ऐसी करामत है जिसका प्रभाव कभी नष्ट नहीं होता अपितु इसका लाभ दूर तक पहुंचता है। मोमिन को चाहिए कि सृष्टि तथा सृष्टा की दृष्टि में करामत वाला हो जावे। अनेक मदिरा सेवन करने वाले तथा भोग-विलास में लिप्त ऐसे देखे गए हैं जिन्होंने किसी चमत्कारी निशान को स्वीकार नहीं किया किन्तु शिष्टाचार की अवस्था को देखकर उन्होंने भी सिर झुका लिया तथा स्वीकार करने के अतिरिक्त उन्हें कोई रास्ता नहीं मिला। अनेक लोगों के जीवन चरित्र में इस बात को पाओगे कि उन्होंने शिष्टाचार की करामत ही को देखकर सच्चे दीन को क़बूल कर लिया। एक अवसर पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि शिष्टाचार दो प्रकार के होते हैं। एक तो वे हैं जो आजकल के नव शिक्षित लोग पेश करते हैं कि भेंट इत्यादि के अवसर पर भाषा की चपलता तथा पाखंड के साथ पेश आते हैं तथा दिलों में कटुता एवं चाटुकारिता की भावना भरी होती है। ये शिष्टाचार क़ुर्आन शरीफ़ के विरुद्ध हैं। दूसरी प्रकार शिष्टाचार की यह है कि सच्ची सहानुभूति करे, दिल में पाखंड न हो तथा चपलता और पाखंड इत्यादि से काम न ले। जैसे ख़ुदा तआला फ़रमाता है- إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْإِحْسَانِ وَإِيتَاءِ ذِي الْقُرْبَىٰ तो ये सम्पूर्ण मार्ग हैं, न्याय करो, न्याय पूर्वक कार्य करो, जो वास्तविकता है उसे बयान करो, जहाँ उपकार करने की आवश्यकता है वहाँ उपकार करो। फिर इससे आगे बढ़ो तो इस प्रकार व्यवहार करो जिस प्रकार एक माँ अपने बच्चे से करती है अथवा कोई घोर सम्बंध रखने वाला अपने निकटवर्ती सम्बंधी के साथ करता है। तो फ़रमाया कि यह सम्पूर्ण रीति है तथा प्रत्येक सम्पूर्ण रीति तथा निर्देश ख़ुदा के कलाम में विद्यमान है। जो इससे विमुखता दिखाते हैं वे दूसरे स्थान पर मार्ग दर्शन प्राप्त नहीं कर सकते। अच्छी शिक्षा अपने प्रभाव के लिए मन की शुद्धि चाहती है जो लोग इससे दूर हैं, यदि गहरी दृष्टि से उनको देखो तो उनमें अवश्य गन्द दिखाई देगा।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि शिष्टाचार दूसरी नेकियों की कुंजी है। जो लोग शिष्टाचार का सुधार नहीं करते वे धीरे धीरे भलाई हीन हो जाते हैं। फ़रमाया कि मेरा तो यह विश्वास है कि दुनिया में प्रत्येक वस्तु काम आती है, विष और गन्दगी भी काम आते हैं, इस्टर कीनिया (रसायन) भी काम आता है, स्वभाव पर प्रभाव डालता है किन्तु इंसान जो उच्च शिष्टाचार को प्राप्त करके लाभप्रद अस्तित्व नहीं बनता, वह किसी भी काम नहीं आ सकता।

अतः याद रखो कि शिष्टाचार का सुधार अत्यंत आवश्यक बात है क्यूँकि नेकियों की माँ शिष्टाचार ही है। कुछ लोगों की आदत होती है कि मांगने वाले को देखकर चिड़ जाते हैं और कुछ मौलवियत की रग हो तो उसको बजाए कुछ देने के सवाल के मसले समझाना शुरु कर देते हैं। फ़रमाया- और उस पर अपनी मौलवियत की धाक बिठाकर कई बार कठोर शब्द भी कह देते हैं। इतना नहीं सोचते कि मांगने वाला स्वस्थ होने के बावजूद यदि कुछ सवाल करता है तो स्वयं पाप करता है। उसको कुछ देने में तो कोई गुनाह नहीं होता बल्कि हदीस शरीफ़ में لو اتاك راكباً के शब्द आए हैं अर्थात चाहे सवाल करने वाला सवार होकर भी आए तो भी कुछ दे देना चाहिए और क़ुर्आन शरीफ़ में وَأَمَّا السَّائِلَ فَلَا تَنْهَرْ का निर्देश है कि सवाल करने वाले को मत झिड़को। अतः याद रखो कि साईल को न झिड़को, इससे इस प्रकार के बुरे शिष्टाचार का बीज बोया जाता है। शिष्टाचार यही चाहता है कि मांगने वाले पर शीघ्र ही अप्रसन्न न हो, यह शैतान की इच्छा है कि वह इस रीति के द्वारा तुमको नेकी से वंचित रखे तथा बुराई का अधिकारी बनाए।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- फिर हमारे समाज में सामान्यतः वालिदैन के विषय में यह सवाल होता है कि वालिदैन यदि अहमदी नहीं अथवा विरोध कर रहे हैं तो किस प्रकार उनको प्रसन्न करना है? हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने शेख़ अब्दुर्रहमान साहब क़ादियानी को उनके वालिद के बारे में नसीहत फ़रमाई कि उनके बारे में दुआ किया करो। हर प्रकार से तथा यथा सम्भव वालिदैन को प्रसन्न करना चाहिए तथा उनको पहले से हज़ार गुना अधिक शिष्टाचार और अपना पवित्र नमूना दिखलाकर इस्लाम की सत्यता का समर्थक बनाओ, क्यूँकि वे मुसलमान नहीं थे इस लिए उनको अपना नमूना दिखाओ ताकि वे इस्लाम की सत्यता को स्वीकार कर लें। शिष्टाचार का नमूना ऐसा चमत्कारी है कि जिसकी दूसरे नमूने से बराबरी नहीं कर सकते। सच्चे इस्लाम का स्तर यह है कि उसके द्वारा इंसान उच्च कोटि के शिष्टाचार पर हो जाता है तथा वह एक विशेष व्यक्तित्व बन जाता है। सम्भ्वतः ख़ुदा तआला तुम्हारे माध्यम से उनके दिल में इस्लाम की मुहब्बत डाल दे। इस्लाम वालिदैन की सेवा करने से नहीं रोकता। दुनिया की बातों में जिनसे दीन की हानि नहीं होती उनका हर प्रकार से पूरा आज्ञा पालन करना चाहिए। दिल व जान से उनकी सेवा करो। आपने एक अवसर पर फ़रमाया कि शिष्टाचार ही हैं जो इंसान तथा जानवरों में अन्तर करते हैं। चार पाँव वाले अवस्था तथा मात्रा में अन्तर नहीं कर सकते और जो कुछ आगे आता है तथा जितना आता है खाता चला जाता है और अन्ततः उलटी कर देता है। यहाँ हमने देखा है कि कुछ लोगों का यही हाल है, स्वार्थ पूरा नहीं होता तथा उचित और अनुचित ढंग से चाहे वह खाना हो अथवा लोगों का माल हो खाने का प्रयास करते हैं।

दूसरी बात यह है कि पशु वैध और अवैध में अन्तर नहीं करता। फ़रमाया कि एक बैल कभी यह भेद नहीं करता कि यह

पड़ौसी का खेत है इसमें न जाऊँ। फ़रमाया कि ये लोग जो शिष्टाचार के नियमों को तोड़ते हैं तथा चिंता नहीं करते मानो कि इंसान न हों, अनाथों का माल खाने में कोई संकोच नहीं करते। जब अनुचित ढंग से खाते हैं तो फिर ऐसे इंसानों का ठिकाना नर्क बन जाता है। फ़रमया- अतः याद रखो कि दो पहलू हैं, एक अल्लाह की महानता का, जो इसके विरुद्ध है वह भी शिष्टाचार के विरुद्ध है तथा दूसरा अल्लाह के प्राणियों से सहानुभूति का, अतः जो मानव समाज के विरुद्ध हो वह भी शिष्टाचार के विरुद्ध है। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- यदि अल्लाह के हक़ अदा नहीं करते, उसकी महानता को स्वीकार नहीं करते, उसकी उपासना नहीं करते, उसकी बातों को ध्यान पूर्वक नहीं सुनते, उसकी प्रसन्नता प्राप्ति का प्रयास नहीं करते, तब भी यह शिष्टाचार नहीं और यदि लोगों के हक़ अदा नहीं करते, अनुचित ढंग से उनके माल खाते हो, हानि देने का प्रयास करते हो अथवा अन्य तरीक़े से अशिष्टता दिखाते हो तो यह भी शिष्टाचार के विरुद्ध है। आप फ़रमाते हैं- आह! बहुत थोड़े लोग हैं जो इन बातों पर जो इंसान के जीवन का वास्तविक उद्देश्य तथा लक्ष्य है, विचार करते हैं।

फिर एक बुराई घमंड है जो नेकियों से वंचित कर देता है बल्कि ख़ुदा तआला की अप्रसन्नता का कारण बना देती है। आप फ़रमाते हैं- सूफ़ी कहते हैं कि इंसान के भीतर बुरे आचरण के अनेक जिन्न हैं तथा जब ये निकलते हैं तो निकलते रहते हैं परन्तु सबसे अन्तिम जिन्न घमंड का होता है जो उसमें रहता है और ख़ुदा की कृपा और इंसान के सच्चे संघर्ष तथा दुआओं से निकलता है। फ़रमाया कि बहुत से आदमी अपने आपको विनीत समझते हैं किन्तु उनमें भी किसी न किसी प्रकार का घमंड होता है। इस लिए घमंड की सूक्ष्म से सूक्ष्म शाखाओं से बचना चाहिए। कई बार यह घमंड धन के कारण पैदा होता है, धनवान घमंडी अन्य लोगों को कंगाल समझता है तथा कहता है कि यह कौन है जो मेरा मुक़ाबला करे। कई बार वंश और जाति का घमंड होता है, समझता है कि मेरी जाति बड़ी है तथा यह छोटी जाति का है। कई बार घमंड ज्ञान के कारण भी पैदा हो जाता है। एक व्यक्ति झूठ बोलता है तो यह तुरन्त उसका दोष पकड़ता है तथा शोर मचाता है कि इसको तो एक शब्द भी उपयुक्त बोलना नहीं आता। अर्थात भिन्न भिन्न प्रकार के घमंड होते हैं तथा यह सब के सब इंसान को नेकियों से वंचित कर देते हैं तथा लोगों को लाभ पहुंचाने से रोक देते हैं, इनसे बचना चाहिए।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपनी जमाअत को उपदेश देते हुए फ़रमाते हैं कि जो व्यक्ति अपने पड़ौसी को अपने आचरण में बदलाव दिखाता है कि पहले क्या था और अब क्या है, वह मानो एक प्रकार की करामत दिखाता है, इसका प्रभाव पड़ौसी पर बड़ा अच्छा होता है। जब कोई व्यक्ति एक सिलसिले में शामिल होता है तथा उस सिलसिले के मान सम्मान का ध्यान नहीं रखता और उसके विरुद्ध करता है तो वह अल्लाह के यहाँ पकड़ा जाता है क्यूँकि वह केवल अपने आपको ही विनाश में नहीं डालता अपितु दूसरों के लिए एक बुरा नमूना होकर उनको सत्य एवं हिदायत के मार्ग से वंचित रखता है। अतः जहाँ तक आप लोगों का सामर्थ्य है ख़ुदा तआला से सहायता मांगो तथा अपनी पूरी शक्ति और साहस के साथ अपनी दुर्बलताओं को दूर करने का प्रयास करो। जहाँ विवश हो जाओ वहाँ सत्यनिष्ठा एवं विश्वास के साथ हाथ उठाओ क्यूँकि विनम्रता और विनयता के साथ उठाए हुए हाथ जो सत्य और विश्वास की प्रेरणा से उठते हैं, ख़ाली वापस नहीं होते। हम अनुभव से कहते हैं कि हमारी हज़ारों दुआएँ क़बूल हुई हैं और हो रही हैं।

अल्लाह तआला हमें रसूल के सुन्दर मार्ग पर चलते हुए अपने शिष्टाचार को हर प्रकार से तथा प्रत्येक अवसर पर और प्रत्येक स्थान पर तथा प्रत्येक अवस्था में सुन्दर से सुन्दर बनाने का सामर्थ्य प्रदान करे। हमारे शिष्टाचार के स्तर अल्लाह की प्रसन्न्ता प्राप्ति के लिए हों। हमने ज़माने के इमाम को माना है तो हमारी सोच हर समय यह रहे कि हमारा कोई कर्म इस्लाम, आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बदनामी का कारण न बने बल्कि इस्लाम की सुन्दर शिक्षा को हम फैलाने वाले हों तथा संसार को इसके द्वारा प्रभावित करने वाले हों तथा इससे बढ़ कर यह कि हम अपने आचरण के स्तरों को बढ़ाने का हर समय प्रयास करते रहें तथा अल्लाह तआला के आगे झुक कर दुआ से काम लेते हुए अल्लाह तआला से इसकी प्राप्ति के लिए सहायता मांगने वाले हों।

ख़ुत्बः जुम्अः के अन्त में हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- नमाज़ों के बाद मैं एक जनाज़ा ग़ायब पढ़ाऊँगा जो मुकर्रम शेख़ अब्दुल हमीद साहब हल्क़ा डिफ़ैन्स सोसाईटी कराची का है। 15 फ़रवरी को 88 वर्ष की आयु में उनका निधन हो गया। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। हुज़ूर-ए-अनवर ने मृतक के सद्गुण बयान फ़रमाए तथा जुम्अः के बाद नमाज़े जनाज़ा ग़ायब पढ़ाई।

TOLL FREE NO: 18003010213 1